PRINTED BOOK

हिन्दी भाषा

[illegible]

28

THE VEDIC PATH

Quarterly Journal of Vedic, Indological
and Scientific Research
Gurukula Kangri Vishwavidyalaya,
HARDWAR

To,

If not delivered, please return to :
Dr. R. L. Varshney
Editor, Vedic Path
'Dreamland'
P. O. Gurukula Kangri-249 404
HARDWAR, U. P., INDiA.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नवेदमनो सिमवनर हवे सुघ रनर-
परमेश्वर उस्तति रो १ गलकगनक
अजामहनध गीधवा हू परमेश्वर तारे
दलन हरिनाकशाध मोचीर अवम
ताकोज पहलाद मज मज परमेश्वर
उस्तति रो २
हतनासिंहारी हरणाचनहूंकी विदारी
देह दैंत अघासुरहूंकी शिरीजा हका
री है - शिलोजा हतारीवकहूंकी चों
चचीर गरी रोसे भोमपारी जैसे आ
री चीरगरी है - रामहोके दैतनकी
सेना जिनमारी अरं आपनो बिभी
षनकौं दीनी लंकसारी है रोसी मां
तिविजनकी पत्नी उधारी अवतार लै
के साधजैसे पृथिवी उधारी है १
इंशकोतिफल औरे आमोजगार - न
वीनदजफा वीनद अजरोंजगर - १
एकशहर मेंवजहजार - वजेवजे वि
चलाले दार - कुदरत देखो उवर्जव

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नाथै नांश्टमिट्टीगाराल्नाथे - नांजो
हराजेनांजेहपीर समनांदेहत्याज
हरीतीर - इक्कापयेनांपिंडउजाडें
वेरवनपयेधडुजाणाविचारे
ननभुजम् - वहलेलम् - हदबा
ला - भाषायाम्
लोमशा - श्री - लोमालिका - उ
ल्कामुखी - श्रृगाल: - श्रृगाली -
लिका - किकि: - खिखि: -
खिंखिर: - खिंखिरा - क्रोष्टा -
भू - भूरिमाय: - वाचलि: - व
ञ्चल: - लूमडी भाषायाम् -
विद्रधि: व्रणसम्पूर्ण: स्फोटक: -
पुरोहित: कुलाचार्य: ऋत्विक् कुल
गुरु: कुलविप्र: -
स्थापत्य: वस्त्रगृहाधीश: -
वीतवृमीय: वनूधगजानीयोगारिश्रियो
महावेगीतनुभेद: -
कूर्मलोमतनुत्राणम् -
कोमतम् - इच्छातम् - यथेप्सितम् -

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

चिपदेशानकौटिल्यं सहस्रं वधिरांधयोः
कुब्जवामनयोर्नीहं कोरोसंख्यानवि
द्यते २ योषिद्धिरिराप्याभरणाम्बरा
दिद्रव्येषु मायारचितेषु मूढः प्रलो
भितात्मा ह्युपभोगबुद्ध्या पतंगवन्न
श्यतिनष्टदृष्टिः २
महाभारते रैभ्यं प्रति श्रीकृष्णवाक्यम्
मं विष्ण्वत्यवतारेण शंकरो नीललोहि
तः श्रुतिस्मृतिप्रतिष्ठार्थं भक्तानां हि
तकाम्यया २ व्याकुर्वन्व्याससूत्राणि
श्रुतेरर्थं यथोक्तवान् श्रुतिन्यायः स
एवार्थः शंकरः सवितानन: २
जीर्यन्ते जीर्यतः केशा दन्ता जीर्यं
ति जीर्यतः चक्षुः श्रोत्रादि जीर्यंते त
सैका तृष्णा यते २ तावदुर्गोनी
गृहणां पापमार्गयते परान् ग्रंथी
६ र बेतुर्षो यातः कारणं कालगौरवम् २
गृहरोत्सवतो शास्त्राराजाशास्त्राद
रात्मनाम् रहः प्रच्छन्नपापका

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रामावैवस्वतीयमः — कामाख्या
पातुनित्यंगृहगतमवताद्धैमवीत्वां
समास्यश्रीमद्व्रजाधिराजनमवतु
रणमस्वैकालिकातेसहाया। दुर्गा
दुर्गैवतुत्वांसुरारिपुदलिनीराज्यम
व्याद्भवानी पुत्रैःपौत्रैःप्रपौत्रैश्चि
रतरमभिषितंमंहच्चराज्यंसमृद्धम्
आइरे आरे ऊधो रेसीनमकलीयोआ
यरे — स्था० श्रुमनानीरप्रवाहनग्रा
वेव्रजमंडलवांकोमहीभावे — वृंदाव
नघनसघनलागेकूंजरहीमरझाइ
रे २ बधरननेहीरतेजदीनौ भ
गऊग्रुमनवनतृणपागनकीनौ —
ग्वालवालगोकुलकेवासीसभीरहे
मरझाइरे २ नंदनदनग्रावतन
लीवनसौं श्रीधाजरदमईहैननसौं
— दूधपिलायोगोदखिलायोसोक्या
नीवेझाइरे २

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कुब्जा कुटिल नकंस की दासी जाम खदेखत आवे हासी - सो कीनी पटरानी या दव कुल की दगन ताइ रे ४ 5

कुब्जा के संग भोग न नाइयो गोपी अन को लिखयोग पठायो - सूरदास कृष्ण कायर की प्रवगत लिखी न जाइ रे ५

वार्त्ता. सकल गुनै त्यनन्यमतिर्मिविद्या समभ्यस्यताम् विद्याविशुद्धदेति रेव वपुषिचेन्नत्वा श्रुदेयो ततं - स्वद्योतद्युतिवद्भवत्स्वपिहितां तानम्बीत्य सूर्यं नृपेत्र्मान्येष्ममहाशयैरन्दिनं सन्मानितासोषिता: । किं ब्रूमो यदि साम वेत्ति विदिवारीनां ध्यविध्वंसिनी दारिद्र्यस्य विनाशिनी नृपतितो मानार्थसंदायिनी - धर्माधर्म विवेक संव्यवहृति प्रावीण्य संवर्द्धिनी पित्रो: कीर्तिकरी गरो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

असतंतं ख्याते जौनि श्री सदा-२ मनकू
नफ्लो का विमो -
यशोदा मैया बालक देख नांम्हल-ये
हतौ सभ देवन को म्हल-यशोदा-ख्या
सात समद्रुजां के उदर विराजे शिव
विरंचयां के शोभन नारे-चोदाभ
वन जां के हैं उरमाल सो क्यों बांधी
मैया करवल नाल २
सतयुग में हिरिणाकश्यप मारे ओ लं
का में रावण सहस कारे ओ-मारे अ
सुर जां के रूप बलरात-सो क्यों बां-२
वामन रूप होइ बल छल लीना
तीन पग नाल अंकार कर दीना-
चरण धाप ले गये पताल-सो क्यो-
२ शेष सदा गुण गावें इन के पारा
वार माया न ही तिन के मौर धार
रहेन दलाल सो क्यों बांधो ४
गगन मंडल जां के हैं सीसा उत्तरख
प्रकार राज जगदीश जां के संग रह

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तेहैंगपालन सोक्योंबांधो ५ चारो 7
वैदजांके हैं गेभ्यास कोहिमानश
शिजोतप्रकाश महादासमजला
लत्रिभंगी जांकीमायासचेरखंडमें
अभंडी- भक्ता हेत लीना अवतार सो
क्योंबांधो - ६ कवित्त
बारांवर्ष रसकुनकाशीवासीहोइकर
दधिजोविलोडवेदकसरनाराई है-
पूर्वमीमांसापुनउत्तरमीमांसादेखो
ऐसीकौनवातजोतोहमकोनांआईहै-
न्यायमैंनांबोलनुदेऊंब्रह्मक्योंना
होवेआपु सांख्यपतंजलकीधूडसी
उगईहै- कहतमुकुंदराकलोम
दोमवलीदेखो धनीआगेकूकर
जोडूधरीहलाईहै
काशीकेवीचपढवहुकालभटतमें
अंतमरेपनजाई नातरचोपुनमान
कलंवनितासुतमित्रकलत्रनांभाई-
देशादेशफिरेमरमूरखघोडीसीसी
थकेचावरताई लोभकीलीकनो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लोचेनरः सोईलोभरसोसभहीदुःख
दई १ सवैया-
भरवसें कहामैंयतीचित्तनहींरंचसती
मायाकेलीयेकरताबहुभेषहै-व
नयोतोब्रह्मचारीचित्तलक्ष्यपरनारी-
क्रियातोविशेषकरेअंतरकालेषहै-
बगलमेंकुरानदिलदुनीयाहरामं
(भसलेतोरहूकेकरेलोकजारोंशेषहै-
कहतबलीरामधोडमूढेकामसक
रीकीफकीरीसेचोरीभीविशेषहै १
जहूराजहंगयासीगया ऊन्येसलनोंदे
खीदया- चलरामकीघरनेंअजेबी
कुंधनहीगया १ धीयांधाडपुत्रव
धयाड रनदुःखांदाभूत इसघाली
तेसुधरयाकोईसुरजनकेहूंघरह १
आशाकाखावेशबाठगठक्रूरसुनयार
एहनैंमीतनाकीजियेबांदरवेदक
लाल १
कलालांकोफसंकुरसीवकुरसी-
खरेखरजोदगांमजसबचुपरसी १

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उत्तरेरामचरिते-द्वि॰ऽङ्के- कराडलद्विपगं
डपिण्डकबरोत्कमेन सम्पातिभि धर्मत्त
सितनवन्वनैः स्वकुसुमैरर्चन्ति गोदावरीम्-
च्छायापश्चिमारा विच्छिरमरवव्याकृष्ट
कीटत्वचः कूजत्क्लान्तकपोतकुक्कुटकुलाः
कूले कुलायद्रुमाः ।
प्रतिसूर्यकः कृकलासः-
कूजत्कुञ्जकुटीरकौशिकघटाघुत्कारवत्की
चकस्तम्बाडम्बरमूकमौकुलिकुलः क्रौञ्चा
वतोयं गिरिः एतस्मिन्प्रचकौलाकिनां प्रच
लतामुद्वेजिताः कूजितैरुद्वेल्लन्ति पुराणचं
दनतरुस्कन्धेषु कुम्भीनसाः ।
० मौकुलिर्वायसः- प्रचलाकिनो मयूराः-
कुम्भीनसाः क्रूरसर्पाः
एतस्मिन्मदनोऽवोत्सवान्तेष्वॅविरोऽतमुग्ध
लोलबर्हः मरणमुकुटइवो(यम)च्छिरवः क
पम्बे नदति सरावबद्ध(स)रव(न)शिरपरव(ग)-।
महामान्य श्रीमत्प्रभवद्दयानन्दनग
रे- विरजेविद्यानां जगतिविदितनाध्यापन
समा- जनास्तात्रागत्य त्रयपठनवशाद्य
विनयाः - प्रपूर्णसन्तोरज्यं विमलपदल
व्याचकृतिनः ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सरस्वती स्थिता वक्त्रे लक्ष्मी वेश्मनि ते
स्थिता - कीर्तिः किं कुपिता विद्वन्
येन देशान्तरं गता ।
किं वृत्तान्तैः परगृहगतैः किन्तु नाहं
समर्थः तूष्णीं स्यातुं प्रकृतिमुखरा
विप्रजातिस्वभावः जो है ते से विपरीत
दुनथा चत्वरे पान गोष्ठी - उन्मत्तेव भ्र
मति भवतो वल्लभा वित्तकीर्तिः ।
कर्पूरन्ति सुधाद्रवन्ति कमलालासं
तिहंसन्ति च - प्रालेयन्ति हिमालयन्ति
करकासारन्ति हारन्ति च त्रैलो
क्यांगनरंग लंघिम गतिप्रागल्भ्य
संभाविताः शीतांशोः किरणाट्ठ
टाइव जयन्त्येता हि सत्कीर्त्तयः ।
जात पात न्यारी करी सम सीति
हारी नाथ केवट के कमैरा कमीके
करावि हारीये - तुमतो भवसागर
से उतारन वस्मा रघ कार हम सरिता
उतारकर कुटंवा दिन उजारिये -
नाई नै न नाई ल्तैत धोबी नां धुयाई

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥

देनदेकेउनराईहमरीजाननांवि
गारीये - वेशेग्राशनाईजाननोहू
कोउनारपारयारेघारग्राऊकमी
रमींकोउनारीये ।

उज़रदानतरीकनवनीमज़ौनरवरंद-
कवाइग्रनलश पोष्टीदग्रज़ऊनर
ग्रारीस ।

सिफलयेखुशपोशारावरमसनदेख
दज़ामदे:- कफशगरजररीववद्
वास्नायसरननवांनसाद ।

ग्रादमीराग्रादमीयमनाज़मस्त-
ऊदराखुशवोनवाशदहेज़मस्त- ।

वरनवाज़ासायडशमन तकीयःक
रदन-ग्रवलहीस- पायवोसेसे
लग्रज़पाग्रफकुनददीवारस ।

ग्रकालजलदावलीकिरननामम
कावली रपर्देलिविधुंनदत्तुद
नुहन्नशीतद्युतिम् इदन्नुमतद
दुतंयदंपायिविद्युदत्तावलम्बि
कनकाचलद्वयमधोमुखं लंवते ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA